

भगवान धन्वंतारे को आरती: जय धन्वंतारे देवा

पद 1

जय धन्वंतरि देवा, जय धन्वंतरि जी देवा।
जरा-रोग से पीड़ित, जन-जन सुख देवा॥

पद 2

तुम समुद्र से निकले, अमृत कलश लिए।
देवासुर के संकट, आकर दूर किए॥

पद 3

आयुर्वेद बनाया, जग में फैलाया।
सदा स्वस्थ रहने का, साधन बतलाया॥

पद 4

भुजा चार अति सुंदर, शंख सुधा धारी।
आयुर्वेद वनस्पति से, शोभा भारी॥

पद 5

तुम को जो नित ध्यावे, रोग नहीं आवे।
असाध्य रोग भी उसका, निश्चय मिट जावे॥

पद 6

हाथ जोड़कर प्रभुजी, दास खड़ा तेरा।
वैद्य-समाज तुम्हारे, चरणों का घेरा॥

पद 7

धन्वंतरिजी की आरती, जो कोई नर गावे।
रोग-शोक न आए, सुख-समृद्धि पावे॥